

डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय के शिक्षाशास्त्री का गवेषणात्मक चिंतन

कल्पना रानी

शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय
झुंझुनू (राजस्थान)

डॉ० शुभराम

शोध निर्देशक
शिक्षा विभाग
श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय
झुंझुनू (राजस्थान)

सारांश

डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय को एक कुशल एवं दक्ष शिक्षाशास्त्री होने का गौरव प्राप्त है। वे वास्तव में अनुरागी शिक्षा शास्त्री हैं। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की हैं। उनका शिक्षा क्षेत्र का क्षितिज अत्यन्त व्यापक एवं विशद है। भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक तत्त्वों का लवण-क्षीर समाहार देखने को मिला है। जिस निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता के साथ उन्होंने शिक्षा क्षेत्र का चयन किया है, वह वास्तव में अनुकरणीय है। ब्रजमण्डल में स्थायी रूप से निवास करते हुए उन्होंने ब्रज संस्कृति के साथ-साथ वैश्विक संस्कृति का गंभीर अध्ययन किया है। डॉ० उपाध्याय सदैव भारतीय शिक्षा दर्शन की विचारधारा में निमग्न रहकर साहित्य सृजन करते रहे हैं। जिस परिश्रम एवं आत्मीयता से शिक्षण कार्य करते हुए उन्होंने शिक्षाशास्त्री का दायित्व निर्वहन किया है, वह अपने आप में अद्भुत है। उसे देखकर प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन का स्मरण होना स्वाभाविक ही है। गंभीर एवं गहन विषय को सरल, सुबोध एवं सहजता से हृदयंगम कराने में शिक्षाशास्त्री डॉ० उपाध्याय अत्यन्त निपुण हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों के विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों से परिचित होते हुए उन्होंने अपने शिक्षा विषयक सिद्धान्तों का विश्लेषण समन्वयात्मक पद्धति से किया है। डॉ० उपाध्याय शिक्षा जगत से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। वे शिक्षाविद्, साहित्यिक होने के साथ-साथ एक दार्शनिक भी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में वे एक सीमा के अन्तर्गत शिक्षादर्शन के प्रयोगवादी भी रहे हैं। यही कारण है कि वे सदैव शिक्षादर्शन के नए रूपों को अपनाने का साहस करते हुए दिखायी पड़ते हैं। उनका साहित्यिक जीवन के साथ-साथ शिक्षा दार्शनिक का भी जीवन सफल रहा है। उपाध्याय जी शिक्षाशास्त्री के रूप में अपनी धुन के पक्के हैं। उनका शिक्षा दर्शन मानव समाज और शिक्षा क्षेत्र को गहराई से प्रभावित करता है। उन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा के द्वारा साहित्य और शिक्षादर्शन के अत्यन्त मूल्यवान भण्डार को सुलभ किया है। शिक्षाशास्त्री की बहुमुखी प्रतिभा साहित्य और शिक्षा जगत दोनों क्षेत्रों में समान रूप से सफल रही है। शिक्षार्थियों के शैक्षिक उन्नयन एवं मार्गदर्शन हेतु प्रोत्साहित करना, प्रेरित करना वे अपना परम कर्तव्य समझते हैं। अपनी बुद्धिमता, निःस्वार्थता, निष्ठापूर्ण कर्तव्यपरायणता, अनुभव एवं लगन के कारण शिक्षाशास्त्री, डॉ० उपाध्याय जी अपना पुनीत दायित्व आज भी निर्वहन कर रहे हैं। शिक्षाशास्त्री के रूप में उपाध्याय जी इस उक्ति को चरितार्थ करते हैं कि “विकार हे तो सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः”— अर्थात् जो जितने अधिक विकार-हेतु से अनासक्त रह सकता है, वह उतना ही महान है।

मुख्य शब्द – समाहार, अनुरागी, लवण-क्षीर, शाश्वत, क्षितिज, अनुकरणीय, निष्ठा

प्रस्तावना

शिक्षाशास्त्री डॉ० उपाध्याय जी स्थानीय स्तर पर जनप्रिय शिक्षाशास्त्री के रूप में चर्चित एवं लोकप्रिय हैं। उनका पूर्णतः प्रभाव समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं एवं मीडिया तंत्र में देखने को मिलता है। अनन्त, प्राची, अन्तरा, सम्भाव्य, साहित्य प्रभा आदि में डॉ० उपाध्याय के वक्तव्य, अभिभाषण कविताएँ, व्रत एवं त्यौहारों पर आलेख तथा शिक्षाशास्त्री एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र पर गवेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित होते रहे हैं। सरस्वती जी की उपाध्याय जी पर ऐसी कृपा दृष्टि रही है कि वे आज भी ग्रन्थ पर ग्रन्थ लिखते चले जा रहे हैं। शायद ही कोई ऐसा विषय बचा है, जिस पर शिक्षाशास्त्री उपाध्याय जी की लेखनी न चली है। उनकी अनेक रचनाएँ एवं कृतियाँ उनकी बहुमुखी प्रतिभा का सुन्दर साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। जीवन के अमृत महोत्सव सम्पन्न करते हुए वे सरस्वती की अराधना के लिए इतना समय आज भी अवश्य निकाल लेते हैं कि सहज ही साहित्यानुशीलन एवं साहित्य सृजन हो सके।

डॉ० उपाध्याय ने अपनी कृति “साहित्यिक अनुसंधान नए संदर्भ” में लिखा है कि “साहित्यानुसंधान, के क्षेत्र में अनेक मानदण्ड चर्चित और प्रचलित हैं। पाश्चात्य में विकसित साहित्यानुसंधान प्रणालियों को अंगीकार करती हुई भारतीय समीक्षा ने भी अपनी साहित्यानुशीलन की प्रवृत्ति और पद्धति विकसित की है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक कारकों ने साहित्यानुसंधान को सुदृढ़ पीठिका पर प्रतिष्ठित करने में योगदान दिए हैं। तुलनात्मक पद्धति, विशिष्ट विषयों का व्यापक विवेचन-विश्लेषण, साहित्यासों की भूमिका, संस्कृत काव्यशास्त्रों के अनुवाद, साहित्यिक आयोजन एवं वैचारिक शोध गोष्ठी, समीक्षित ग्रन्थों का सहयोग, हस्तलिखित ग्रन्थों का शोध, टंकित ग्रन्थों का योगदान, अप्रकाशित शोध पांडुलिपियों का सहयोग पाश्चात्य साहित्यिक शोध द्वारा प्राप्त शोध सामग्री आदि ऐसे कारक हैं, जिनसे शोध को विशेष सहायता मिली है। पाश्चात्य चिन्तन परम्परा से गृहीत अनेक वाद भी अनुसंधान कार्य में आज स्वीकृत हो चुके हैं।”

डॉ० उपाध्याय स्वतः बड़े साहित्यकार होते हुए भी अन्य साहित्यकारों के गुणों का सम्मान करते हैं, आदर करते हैं। कोई भी साहित्यकार उनसे मिलकर प्रसन्नता का ही अनुभव करता है। यही स्थिति शोधार्थी एवं विद्यार्थियों के साथ भी बनी हुई है। बुद्धि, भावना एवं क्रिया (भाव लोक, ज्ञान लोक एवं कर्मलोक), तीनों दशाओं में अपना जीवन सन्तुलित रखकर शिक्षा और साहित्य दोनों की ही विशिष्ट सेवाएँ उपाध्याय जी करते चले आ रहे हैं। 27.10.1986 में ‘शिक्षानीति’ शीर्षक से उनकी रचना प्रकाशित हुई है जो शिक्षाशास्त्री के कवि हृदय एवं शिक्षा विषयक अनुराग को प्रदर्शित करती है।

शिक्षा की नई नीति अनुरक्ति जगा दो,
विकृत भाव भंगिमा की उक्ति भगा दो,
शिक्षालय को नवजीवन की सूक्ति दिला दो,
साहित्यिक को वैज्ञानिक पद्धति पकड़ा दो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी डॉ० उपाध्याय की इस रचना का समर्थन करती है। शिक्षाशास्त्री डॉ० उपाध्याय का संवेदनशील चिन्तक यहाँ पर राष्ट्रवादी चिन्तक के रूप में प्रस्तुत हुआ है, यह रचना राष्ट्रीय चेतना मुखरित करने के

साथ-साथ उपाध्याय जी के शिक्षाशास्त्री शिक्षादार्शनिक, शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षा विषयक अवधारणा का साक्ष्य भी प्रस्तुत करती है। शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा के प्रति उनका अक्षय अनुराग है। उनकी बहुमुखी कर्मठता केवल साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं अपितु शिक्षा एवं शिक्षादर्शन के क्षेत्र में अप्रतिम है। उनके परिणामस्वरूप उन्होंने सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी महनीय सेवाएँ की हैं। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को साहित्य और शिक्षा की सेवाओं में अर्पित कर दिया है। सार्वजनिक और सामाजिक जीवन से समय बचाकर उन्होंने हिन्दी साहित्य एवं शिक्षाशास्त्र की श्रीवृद्धि के लिए जो प्रयत्न किए हैं, उनके प्रति पाठक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी सम्मान व्यक्त करते हैं।

साहित्य अवलोकन

अग्रवाल, पावक और मिश्रा, लक्ष्मी ने (2023) 'International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD) Volume -7, Issue 3, ISSN : 2456-6470 'महर्षि अरविन्द के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य' नामक शीर्षक पर अपना लेख प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

1. लेखक की मान्यता है कि अरविन्द का शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा सिद्धान्त बालक के सर्वांगीण विकास के साथ वैज्ञानिक विचारधारा तथा यथार्थ की सत्ता को स्वीकारता है।
2. महर्षि अरविन्द निरन्तर एवं सतत शिक्षा अनिवार्य शिक्षा व्यवसायपरक शिक्षा सृजनात्मक एवं रचनात्मक शिक्षा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की शिक्षा संस्कृति और साहित्य शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। उनके यह शिक्षा दर्शन सम्बन्धी विचार आज भी आवश्यक एवं प्रासंगिक हैं।
3. अरविन्द के विचार शिक्षा जगत को एक व्यवस्था एवं स्थायित्व प्रदान करने वाले हैं।
4. श्री अरविन्द पाठ्यक्रम में बालक की रुचि के अनुकूल उन सभी विषयों को स्थान देते हैं, जिनके द्वारा बालक की शैक्षिक अभिव्यक्ति एवं क्रियाशीलता के गुण का विकास होता है।

शर्मा, सन्तोष कुमार एवं अग्रवाल अक्षय ने (2023) 'International, Refereed, Blind Peer- Reviewed & Open Access Research Journal, ISSN : 2278-5949, Volume-12, Issue 04 'स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं वर्तमान शैक्षिक प्रतिमान का तुलनात्मक अध्ययन' नामक शीर्षक पर अपना लेख प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

1. लेखक की अवधारणा है कि स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय प्राचीन एवं आधारभूत जीवनदर्शन एवं मानव मूल्यों का समसामयिक परिप्रेक्ष्य में युक्तिपूर्ण एवं तर्कसंगत विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
2. प्रस्तुत आलेख में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।
3. स्वामी जी के मूल्य शिक्षा एवं जन शिक्षा सम्बन्धी विचार अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक हैं।
4. व्यक्ति के जीवन की सभी तरह की समस्याओं का समाधान शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है। उनका यह शिक्षा वेदान्त और उपनिषदों पर आधारित है।

अहमद, राहुल, शोकत शबनम ने (2023) 'International Journal for Multidisciplinary Research' E-ISSN : 2582-2160, Volume 5, Issue 2, 2023 'पं० मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक दर्शन और समकालीन शिक्षा प्रणाली पर इसकी प्रासंगिकता' नामक शीर्षक पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

1. लेखक की अवधारणा है कि मदन मोहन मालवीय का शिक्षा समग्र शिक्षा एवं बुनियादी शिक्षा का समन्वित रूप है।
2. मालवीय जी प्राच्य और अर्वाचीन के उद्भट्ट शिक्षाविद् रहे हैं। प्राच्य और भारतीय शिक्षा सिद्धान्तों को समन्वित कर उन्होंने एक नवीन शिक्षा सिद्धान्त निर्धारित किया था, जो भारत की सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ है।
3. वे भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने के पक्षधर रहे हैं। वैदिक साहित्य एवं आध्यात्मिक साहित्यिक परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने व्यावहारिक शिक्षा को प्राथमिकता दी है, जिनमें हिन्दी और संस्कृत भाषाओं का समान महत्व था।

डॉ० वोर्काकाटी विद्यानन्दा ने (2024) ‘International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM), Volume 4, Issue-1 (2024), भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी दर्शनशास्त्र की प्रासंगिकता’ नामक शीर्षक पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

1. लेखक ने वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य शिक्षा की प्रासंगिकता को दृष्टिगत रखते हुए स्वच्छन्दतावादी पद्धति से आकलन प्रस्तुत किया है।
2. पाश्चात्य शिक्षा मानवतावादी विचारधारा तथा सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करते हुए आदर्शवाद, प्रकृतिवाद एवं व्यवहारवाद को विस्तृत धरातल पर विश्लेषित करता है।
3. पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिकों में प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी एवं कान्ट जैसे शिक्षा दार्शनिकों की विचारधारा का भी विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
4. समप्रति भारतीय शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इसी सामाजिक विकास एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों को विद्यालय स्तर पर उजागर करने का प्रयास किया है।

कोहल, कार्टिन, सानुसी, आबिदीन जैनल, सुहैलाह, हुसैन ने (2024) (NJCIE) ‘Nordic Journal of Comparative and International Education, ISSN : 2535-4051, Vol. 8, No. 2, 2024, सतत विकास के लिए मानवतावादी विचार और शिक्षा नामक शीर्षक पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

1. लेखक त्रय ने सतत विकास के लिए शिक्षा में मानवतावादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत समग्र विकास पर विशेष बल दिया है।
2. इसके अन्तर्गत शिक्षा के विचारों, भावनाओं एवं एव भाषणों में गंभीरता से विचार करके मनोवैज्ञानिक धरातल पर विचार व्यक्त किए गए हैं।
3. मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत सिगमण्ड फ्रायड का मनोविश्लेषण एवं स्किनर में व्यवहारवाद का मिला-जुला सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया है।

4. मानवतावाद मानव मूल्यों और चित्ताओं पर ध्यान केन्द्रित करने वाली शिक्षा है, जिसके अन्तर्गत मानव के अन्तरात्मा से सम्बन्ध जोड़कर विचार व्यक्त किए जाते हैं।

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

शिक्षाशास्त्री डॉ० उपाध्याय की शिक्षा विषयक कृतियों में जो उनके शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री रूप का प्रतिनिधित्व करती हैं, उनमें शिक्षा और संस्कृति, साहित्य और संस्कृति, विश्व साहित्यशास्त्र की अवधारणा, विश्व के प्रमुख साहित्य चिन्तक, सार्वभौम साहित्यशास्त्र और डॉ० नगेन्द्र आदि मुख्य हैं। चिन्तन और चिन्तन प्रक्रिया निबन्ध भी उनके शिक्षादर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। समन्वयवादी दृष्टि ही उनके शिक्षा दर्शन का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया है कि “आध्यात्मिक मूल्यों का सम्बन्ध वैज्ञानिक दृष्टि से समाजोपयोगी है। आध्यात्म, विज्ञान से अलग नहीं, बल्कि पूरक है तथा सहायक है। छात्रों को जीवन के उच्च आदर्शों की शिक्षा धार्मिक नैतिक शिक्षा के अभाव में पूरी नहीं की जा सकती। भारतीय संस्कृति ने प्रारम्भ से ही भौतिकता तथा अध्यात्मवाद में समन्वय स्थापित किया है। सामंजस्य की वेदी पर सर्वस्व समर्पित किया है। विज्ञान एवं अध्यात्म के बीच सन्तुलन स्थापित करते हुए अद्यतन परिवेश में शिक्षण-संस्थाओं का यह पुनीत दायित्व बनता है कि वे धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का अवलम्बन लें ताकि वे अपने पावन लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें तथा राष्ट्र को सुयोग्य नागरिक दे सकें— और समाज को एक चरित्रवान सामाजिक।

शिक्षाशास्त्री के रूप में भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षादर्शन का अनुशीलन करने की उनकी दृष्टि अद्भुत है। उपाध्याय जी का यह मत है कि शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। वे अधिक से अधिक भाषाओं के अध्ययन करने का समर्थन करते हैं तथा मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा पर विशेष बल देते हैं। उनका शिक्षादर्शन फिक्टे के शिक्षादर्शन से मेल खाता है, जिसमें कहा गया है कि दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा का उद्देश्य कभी भी पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो सकता है। उपाध्याय जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन-दर्शन पर आधारित है। उन्होंने प्राचीन परम्पराओं एवं अधुनातन मान्यताओं के पारस्परिक सामंजस्य से समन्वयवादी जीवन दर्शन एवं शिक्षादर्शन की स्थापना की है। इसके मूल में समरसता का सिद्धान्त देखा जा सकता है। उनका समन्वयवादी शिक्षाशास्त्री प्रवृत्ति एवं निवृत्ति हृदय एवं बुद्धि, व्यक्ति एवं समष्टि, ज्ञान लोक भाव, लोक एवं कर्म लोक के समन्वित आदर्श का प्रस्तुतीकरण राष्ट्रोत्थान को दृष्टिगत करते हुए किया है। शिक्षाशास्त्री का आनन्दवाद उनके जीवनादर्श एवं समरसता सिद्धान्त पर आधारित है।

शिक्षा में प्राचीन भारतीय दर्शन और जीवन मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के प्रबल समर्थक डॉ० उपाध्याय हैं। भारतीय और पाश्चात्य, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शिक्षा व्यवस्था का प्रबल समर्थक डॉ० उपाध्याय हैं। उनका शिक्षा दर्शन वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। उसमें सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों का समाहार देखने को मिलता है। शिक्षाशास्त्री के रूप में वे अपने अनुभवों के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में निपुण हैं।

डॉ० उपाध्याय ऐसी शिक्षा प्रणाली के समर्थक हैं, जो राष्ट्र के साथ-साथ विश्व के लिए उपयोगी हो और राष्ट्र प्रेमी नागरिक तैयार कर सके। शोधार्थिनी का स्पष्ट मत है कि डॉ० उपाध्याय के शिक्षादर्शन में पाश्चात्य और भारतीय शिक्षादर्शन के तत्त्वों का समीकृत रूप देखने को मिला है। वे पाठ्यक्रम को विस्तृत एवं बहुआयामी रूप में

स्वीकारते हैं। उनका आदर्शवादी दर्शन प्रभावात्मक अनुशासन की पद्धति का प्रतिपादन करता है। उनका वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण भी देखा गया है। शिक्षादर्शन द्वारा वे युग की मान्यताओं एवं आदर्शों का विश्लेषण करके शिक्षण संस्थान की स्थापना के लिए उपयुक्त मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं। उनका दर्शन शिक्षा संस्थाओं की व्यवस्था पर भी प्रभाव डालता है। शिक्षाशास्त्री डॉ० उपाध्याय का मत है कि शिक्षा को भारतीय संस्कृति के अनुरूप इस प्रकार नियोजित किया जाए कि वह राष्ट्रीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को अधिकतम सीमा तक पूर्ण कर सके। इस दिशा में समय-समय पर विभिन्न शिक्षाशास्त्री समाज सुधारकों एवं शिक्षाशास्त्री द्वारा उठाए गए प्रश्नों को भी डॉ० उपाध्याय ने अपनी कृतियों में रेखांकित किया है। शिक्षा में प्राचीन भारतीय दर्शन और जीवन मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के प्रबल समर्थक डॉ० उपाध्याय हैं।

डॉ० उपाध्याय वर्तमान शिक्षा-प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं हैं, क्योंकि यह राष्ट्रीय आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल रही है। इसीलिए शिक्षाशास्त्री उपाध्याय जी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पुरजोर समर्थन करते हैं। प्रकारान्तर से यह शिक्षा नीति भारतीयकरण की प्रवृत्ति का समर्थन भी करती है। भारतीय और पाश्चात्य, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शिक्षा व्यवस्था का प्रबल समर्थक डॉ० उपाध्याय हैं। उनका शिक्षा दर्शन वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। उसमें सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों का समाहार देखने को मिलता है। शिक्षाशास्त्री के रूप में वे अपने अनुभवों के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में निपुण हैं। शोधार्थिनी उनकी इस स्थापना से भी सहमत है कि शिक्षा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। वे तकनीकी शिक्षा पर भी विशेष बल देते हैं ताकि लोगों को रोजी-रोजगार का अवसर मिल सके।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिक्षाशास्त्री उपाध्याय शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन, आध्यात्मिक विकास एवं छात्र का सर्वांगीण विकास मानते हैं। समस्त व्यावहारिक विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देते हैं। करके सीखना एवं अनुकरण विधि द्वारा सीखने आदि को वे महत्त्व देते हैं। शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा के साथ मातृभाषा को भी उन्होंने स्वीकार किया है। अनुशासित संयमित एवं स्वावलम्बी राष्ट्र प्रेमी बालक को वे विशेष महत्त्व देते हैं। शिक्षक को बालक के मित्र, निर्देशक, मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता के रूप में उन्होंने स्वीकार किया है। शोधार्थिनी अपनी शोधकार्य एवं अनुशीलन के बल पर यह निष्कर्ष निकालती है कि डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय के शैक्षिक विचार अत्यन्त मौलिक एवं शिक्षापयोगी हैं उन्होंने आधुनिक विचारों एवं अवधारणाओं को आत्मसात् करते हुए अपना शिक्षा दर्शन के सिद्धान्त को निरूपित किया है। उनका शिक्षा दर्शन पित्रवत्ते और पेस्टालॉजी के शिक्षादर्शन से प्रभावित है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा मानव की सम्पूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक, प्रगतिशील एवं सामंजस्यपूर्ण विकास है। प्रस्तुत विषय में शिक्षाशास्त्री के दर्शन को रेखांकित करते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री के सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थिनी ने अपना समीक्षात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया है। वर्तमान में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भी डॉ० उपाध्याय जी के शिक्षा एवं शिक्षा दर्शन विषय विचार प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची

1. आलोचक डॉ० नगेन्द्र : कृतित्व के विविध आयाम (1985) ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।
2. समन्वयवादी आलोचना (1989), ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।
3. शुक्लोत्तर समीक्षा के नए प्रतिमान (1997) ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।
4. समन्वयवादी समीक्षा और डॉ० नगेन्द्र (1997) अभिरुचि प्रकाशन शाहदरा दिल्ली-32
5. प्रेरणा के स्रोत (1998) मीतल प्रकाशन, मथुरा
6. हिन्दी आलोचना : विकास एवं प्रवृत्तियाँ (1998) अभिरुचि प्रकाशन।
7. अद्यतन काव्य की प्रवृत्तियाँ (2000) अभिरुचि प्रकाशन शाहदरा दिल्ली-32
8. मिथकीय समीक्षा (2001) ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।
9. समन्वयवादी आलोचना: नव्य परिप्रेक्ष्य (2002) ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।
10. शिक्षा और संस्कृति (2005) ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़।